RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-03
March-2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

प्राचीन भारत में धर्म, समाज एवं संस्कृति का एक अध्ययन

डॉ0 शुभेन्द्र कुमार

इतिहास विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (बिहार)

अनेक स्त्रोतों से प्राचीन बिहार के इतिहास की जानकारी प्राप्त होती है। बिहार के लिये सर्वाधिक प्राचीन साहित्यिक स्त्रोत अथर्ववेद है। रामायण, महाभारत तथा पुराणों में भी बिहार के राजवंशीय इतिहास की जानकारी प्राप्त होती है। बौद्ध तथा जैन साहित्य से भी बिहार की जानकारी प्राप्त होती है। कौटिल्य का अर्थशास्त्र भी बिहार की राजनीतिक घटनाओं पर प्रकाश डालता है। बिहार के सामाजिक और सांस्कृतिक इतिहास की जानकारी के लिये चीनी तिर्थयात्रियों (फाहियान एवं ह्वेसांग) के वृत्तांत महत्त्वपूर्ण है। तिब्बती इतिहासकार लामा तारानाथ का बौद्धधर्म का इतिहास भी महत्त्वपूर्ण है। अनेक अभिलेखों सिक्कों एवं उत्खनन से प्राप्त सामग्रियाँ प्राचीन बिहार के इतिहास पर प्रकाश डालती है।

पूर्व वैदिक काल में बिहार में आर्यों का आवास नहीं था। यहाँ अनार्य रहते थे तथा आर्य उनको हेय दृष्टि से देखते थे। उत्तर वैदिक काल में आर्यों का प्रसार पूर्वी भारत में आरंभ हुआ। इसमें लौह प्रौद्योगिकी की देन निर्णायक थी। लोहे की कुल्लाड़ियों से जंगलों की कटाई आसान हो गयी और गांगेय घाटी के घने जंगलों वाले क्षेत्रों में आर्यों का बसना आरंभ हो गया। लोहे का उपयोग भारत में 1000 से 800 ई. पू. के आस–पास हुआ। लगभग इसी समय आर्यों का विस्तार बिहार में हुआ। शतपथ ब्राह्मण में गांगेय घाटी के क्षेत्र में आर्यों द्वारा जंगलों को जलाकर और काटकर साफ करने का चर्चा मिलता है। बिहार का क्षेत्र इससे शामिल था। 6वीं शताब्दी ई. पू. में उत्तर भारत में विशाल एवं संगठित राज्यों का उदय हुआ। बौद्ध साहित्य में 16 महाजनपदों का उल्लेख मिलता है। इनमें तीन महाजनपद मगध, अंग और लिच्छवी गणराज्य बिहार के क्षेत्र में स्थित थे।

मगध राज्य के आरंभिक इतिहास की चर्चा महाभारत में है। बुद्धकालीन राजस्तंभों में मगध सर्वाधिक शक्तिशाली सिद्ध हुआ। आगे चलकर मगध का इतिहास पूरे भारत का इतिहा बना। बुद्धकाल का सबसे बड़ा तथा शक्तिशाली गणराज्य वैशाली था। बिहार के भागलपुर तथा दरभंगा जिलों के भू–भाग में विदेह गणराज्य स्थित था। कपिलवस्तु के शाक्य गणराज्य में गौतम बुद्ध का जनम हुआ था।

वैदिक, पौराणिक, जैन और बौद्ध साहित्य के द्वारा 325 ई. पू. तक बिहार के धम्र, समाज और संस्कृति के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। इन पर विशेष प्रकाश डालने के समकालीन स्मारक एवं पुरातात्विक स्त्रोत का अभाव है।

बिहार में वैदिक संस्कृति के प्रचार में आर्य ऋषि जुड़े हुए थे। सर्वप्रथम वैदिक धर्म विदेह और वैशाली में लोकप्रिय हुआ। बौद्ध साहित्य से पता चलता है कि ब्राह्मण तथा क्षत्रियों के द्वारा यज्ञ इत्यादि किये जाते थे। इसके अतिरिक्त बिहार में लोग पवित्र वृक्षों, यक्षों तथा पवित्र पाषाणों की पूजा करते थे। वैदिक धर्म अपने दो प्रमुख संप्रदायों वैष्णव तथा शैव में संगठित हुआ।

हिन्दू धर्म के विरोध में जैन धर्म तथा बौद्ध धर्म का उदय बिहार में हुआ। दोनों धर्मों ने भारत की सभ्यता–संस्कृति चिंतन धारा, सामाजिक जीवन आदि को काफी प्रभावित किया। भारतीय मनीषियों ने इस जगह को अपनी–अपनी दृष्टि से समझने का प्रयास किया तथा अपने–अपने विचार के अनुसार विचारों का विश्लेष्ण किया। चिंतन के इतिहास में छः पद्धतियों का विकास हुआ। ये पद्धतियाँ है– न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांशा तथा वेदांत। बिहार में तीन विभूतियाँ– जनक, याज्ञवल्क्य तथा गौतम ने भारतीय चिंतन तथा दर्शन के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

बिहार में भाषा तथा साहित्य की उन्नति चरम सीमा पर थी। संस्कृत साहित्य में उत्कृष्ट ग्रंथ रचे गये। इसके अतिरिक्त देशी भाषाओं के साथ हिन्दी, मैथिली आदि भाषाओं की उन्नति हुई।

वैदिक युग में ही जाति प्रथा का विकास हो चुका था। बिहार में आर्यों के आगमन के पूर्व ही जाति प्रथा की नींव पड़ चुकी थी। किन्तु यह कहना कठिन है कि बिहार में आर्यों के आगमन के पूर्व जाति प्रथा थी या नहीं इतना तो अवश्य है कि बिहार में उक्त काल में जाति प्रथा में इतनी कठोरता नहीं थीं

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. Comprehensone History of Bihar Vol I, II Part- 1-4.
2. R.R. Diwakar : Bihar Through The Ages.
3. R.K. Chaudhary : History of Bihar.
4. Minden Wilson : History of Bihar.
5. S.N. Singh : History of Tirhut.
6. Upendra Thakur : History of Mithila.
7. John Houlon : Bihar The Heart Of India.
8. Yogendra Mishra : An Early History of Vaishali.
9. R.C. Majumdar : History of Bengal.

© RRIJM 2015, All Rights Reserved